E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

सूर्य देवता का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

द्युस्थानीय सौर देवताओं में सर्वाधिक स्थूल सूर्य देवता भौतिक सूर्य के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध है। लोकों को प्रकाशित करने वाला सूर्य ही देवता है। इसलिए सूर्य देवता की स्तुति में भौतिक सूर्य की ही विशेषताओं का वर्णन हुआ है। सूर्य आकाश के प्रकाशमान ज्योतिष्पिण्ड का सर्वत्र द्योतक है। सूर्य सृष्ट प्राणियों का नेत्र है। यह दूर-दूर तक देखने वाला, सभी प्राणियों के पाप-पुण्यों का अवलोकन करने वाला है। सूर्य के द्वारा जागरित होने पर मनुष्य अपनी अभीष्टसिद्धि में प्रवृत्त हो जाता है। सूर्य के रथ को सात अश्व खींचते हैं। सूर्य को मित्रावरुण का नेत्र कहा गया है। ये नेत्र दूरद्रष्टा और सर्वद्रष्टा है। यह स्थावरों और जंगमों को गति प्रदान करता है। सूर्य का चमत्कार घेरा ऋषियों के लिए विशेष आकर्षण का विषय था। ऋग्वेद में १० सूक्तों में सूर्य की स्तुति की गयी है।

निरुक्ति- यास्क के अनुसार सूर्य शब्द 'सृ' या 'षु' धातु से निष्पन्न है। उनके अनुसार सूर्य का निर्वचन इस प्रकार है– 'सरते वा सुवतेर्वा' अर्थात् ये अन्तरिक्ष में गति प्रदान करते हैं, लोगों को अपने-अपने कार्यों में प्रेरित करते हैं अथवा वायु के द्वारा ये भूलोक की ओर प्रेरित किये जाते हैं। इसीलिए इन्हें सूर्य कहा जाता है। बृहद्देवताकार शौनक के अनुसार ये प्राणियों के मध्य विचरण करते हैं अथवा ये उन्हें भली-भाँति प्रेरित करते हैं। उनके सभी कार्यों को सम्यक् प्रकार से धारण किये हुए ये उन्हें भलीभाँति प्रेरित करने के लिए उनके मध्य गमन करते हैं।

माता-पिता और वाहन- द्यौ को सूर्य का पिता और अदिति को इनकी माता कहा गया है। कहीं-कहीं उषा को उनकी माता और कहीं पत्नी कहा गया है। पुरुषसूक्त में इनकी उत्पत्ति विराट् पुरुष के नेत्रों से बतलायी गयी है। इसके अतिरिक्त इन्द्र, सोम और धाता को भी सूर्य का जनक कहा गया है। सूर्य का वाहन रथ है। इसके रथ में एक या सात घोड़े जुते हुए हैं। इनके एक घोड़े का नाम एतश् है। इनके रथ में जुते हुए घोड़े हरित कहलाते हैं।

कार्य-

सूर्य अपने प्रकाश द्वारा दानवों को विनष्ट करते हैं तथा व्याधियों, दुःखस्वप्नों आदि को दूर करते हैं। ये आकाश, पृथिवी और अन्तरिक्ष को चारों ओर से भर देते हैं। सूर्य को स्थावर और जङ्गम प्राणियों की आत्मा कहा गया है। इस प्रकार ये स्थावर तथा जङ्गम प्राणियों में आत्म सञ्चार करते हैं। ये अपने अश्वों को जब रथ से अलग करते हैं तो रात्रि हो जाती है और संसार का समस्त कर्मजाल मध्य में ही रुक जाता है। सूर्य द्वारा ही रात और दिन का नियमन किया जाता है। ये सम्पूर्ण जगत् के स्थिरकर्ता और रक्षक हैं। सूर्य की किरणें अन्धकार को फेंक देती हैं।

अनेक नाम-परिदृश्यमान सूर्य के अनेक कार्य तथा रूप हैं, अत: अनेक नामों से इनकी स्तुति की गयी है। जाजल्यमानमण्डल रूप में सूर्य, प्रकृति को प्रकाश देने वाली तथा मैत्रीमय शक्ति के रूप में मित्र, जीवन तथा कार्य के महान् प्रेरक के रूप में सविता, पशुओं के पोषक तथा संरक्षक के रूप में पूषा, आकाश से पृथिवी पर्यन्त तीन पादप्रक्षेपों में व्याप्त हो जाने के रूप में विष्णु, अपने आगमन से ठीक पूर्व आकाश में अनुपम सौन्दर्य युक्त आभा को प्रादुर्भूत करने के रूप में उषा तथा प्रातः काल में सभी दिशाओं को आलोकित करने के रूप में विवस्वान् के नाम से इनकी स्तुति की गयी है।

पृथ्वी से भी अत्यधिक उपकारक देवता सूर्य हैं। वैदिक ऋषियों का ध्यान सूर्य देवता के निम्नलिखित गुणों की ओर विशेष रूप से गया है-क) अन्धकार का नाश, ख) राक्षसों का नाश, ग) दुःखों और रोगों का नाश, घ) नेत्र-ज्योति की वृद्धि, ङ) चराचर की आत्मा, च) आयु की वृद्धि, छ) लोकों का धारण।

एक स्थान पर वैदिक ऋषि की प्रार्थना है कि-हे सूर्य! आप जिस ज्योति से अन्धकार का नाश करते हैं तथा प्रकाश से समस्त संसार में स्फूर्ति उत्पन्न कर देते हैं, उसी से हमारा समग्र अन्नों का अभाव, यज्ञ का अभाव, रोग तथा कुस्वप्नों के कुप्रभाव दूर कीजिए।

वैदिक ऋषियों की प्रगाढ अनुभूति थी कि सूर्य का इस विशाल विश्व में वही स्थान है, जो शरीर में आत्मा का। इसी कारण वेदों में ऐसे अनेक मन्त्र सहज सुलभ हैं, जिनमें सूर्य को सभी जड़-चेतन पदार्थों की आत्मा कहा गया है-'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' अर्थात् ये सूर्यदेवता जंगम तथा स्थावर सभी पदार्थों की आत्मा हैं।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi